



राजी सेठ के 'तत्सम' उपन्यास में नायिका का मानसिक अन्तद्वन्द्व

प्रा. डॉ. भारमल कणबी
एसोसियेट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
श्री यु. एच. चौधरी आर्ट्स कोलेज, वडगाम

भूमिका

हमारे देश में विधवा स्त्रियों का जीवन दुःखों से भरा हुआ और यातनामय है। भारतीय समाज में सामाजिक कट्टरता और रुढ़ियाँ विधवा का जीवन दूँध कर देती हैं। पति की मृत्यु के बाद पत्नी को असहाय बना देती है। स्त्री-जीवन को अभिशाप के रूप में माना जाता है। आधुनिक समय में आन्दोलनों के कारण विधवा नारी की परिस्थिति में परिवर्तन हो रहा है। वर्षा पहले विधवा-विवाह को मान्यता नहीं थी, आज विधवा-विवाह के बारे में व्यापक दृष्टिकोण दिखाई देता है। इन विषम परिस्थितियों से बाहर निकलने के लिए उसके परिवार के सदस्य तथा खुद स्त्री भी पुनर्विवाह का पक्ष लेती दिखाई देती है। हिन्दी के उपन्यासकारों ने विधवा जीवन की कहानी को प्रस्तुत करते उपन्यास लिखे हैं। विधवाओं का पुनर्विवाह पर प्रकाश डालनेवाले उपन्यास भी लिखे हैं। जिसमें राजीसेठ का 'तत्सम' उपन्यास भी इस समस्या को उजागर करनेवाला है।

राजीसेठ के तत्सम उपन्यास में विधवा जीवन पर प्रकाश डाला गया है। इस उपन्यास में विधवा पुनर्विवाह को अंकित किया गया है। इस उपन्यास की नायिका "वसुधा" विवाह के बाद तीन साल में विधवा हो जाती है। उपन्यास में वसुधा की मानसिकता का बड़ी सूक्ष्मता के साथ चित्रण किया गया है। डॉ. उषा यादव के अनुसार, "राजीसेठ का 'तत्सम' उपन्यास भारतीय विधवा की उस मानसिकता को लेकर लिखा गया है, जिसमें वह अपने को संसार का सबसे अभागा प्राणी मानती है और पुनर्विवाह करके अपने जीवन के दुःख को सुख में बदलने के लिए बड़ी मुश्किल से तैयार होती है।"¹

'तत्सम' उपन्यास की नायिका 'वसुधा' एक उच्चशिक्षित नारी है, एक कोलेज में प्राध्यापिका है। उसके पति निखिल की एक सड़क दुर्घटना में अकाल मृत्यु के बाद उसका हराभरा संसार उजड़ जाता है। 'वसुधा' के जीवन संघर्ष की स्थितियों का निर्माण होता है। उन्होंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि ऐसे समय खराब दिन देखने पड़ेंगे। निशा ठवले के शब्दों में-"निखिल वसुधा का पति था, कार दुर्घटना में उसका देहांत हो गया। यदि देहांत न होता तो वसुधा की जिन्दगी एक सामान्य सुखी भारतीय पत्नी की जिन्दगी होती पर निखिल की मृत्यु ने उसे उन सामाजिक संदर्भों के बीच ला पटका जिन्होंने उसे अंतर्मुख होकर सोचने के लिए मजबूर किया।"² 'वसुधा' निखिल के साथ बिताए क्षणों की याद के सहारे अपना जीवन व्यतीत करना चाहती है। उसकी यादों को हमेशा सँभालकर अपने आपको उसके साथ बाँधकर रखना चाहती है। उसकी यादों को मिटा देना उसके लिए असंभव है। भैया की सलाह पर वह सोचती है, "माथे पर सिंदूर की तरह पोंछ डालना चाहते हैं निखिल के साथ जुड़ा जीवनखंड। जैसे कि पेंसिल से लिखी गई थी वह सारी इबारत खर लिया और मिटा दिया गया।"³

'वसुधा' के भाई और भाभी आधुनिक विचारोंवाले हैं। वसुधा के पुनर्विवाह में कोई भी सामाजिक एवं पारिवारिक बाधा नहीं है, बल्कि वसुधा की मानसिकता इस पक्ष में नहीं है। उदार विचारोंवाले भाई-भाभी ने माँ का विरोध तथा वसुधा की नाराजगी को नजरन्दाज कर वसुधा को समझाते हुए उसके पुनर्विवाह के लिए विज्ञापन देते हैं। "लगभग 30 वर्ष की शिक्षित सुसंस्कृत विधवा के लिए आधुनिक और उदार विचारोंवाला 35 से 40 की आयु के बीच सुस्थापित वर चाहिए। जाति बाधा नहीं।"⁴ पुनर्विवाह के लिए दिए गये विज्ञापन के उत्तर में कई पुरुष उससे विवाह करने की इच्छा व्यक्त करते हैं। कई उसे देखने-परखने, स्वयं को दिखाने के लिए उसके धर पहुँच जाते हैं। उनकी हरकतें वसुधा को बेशर्म

लगती हैं। उन सबको झेलना उसके लिए सबसे मुश्किल काम लगता है। वसुधा का हर किसी को नकारना भाई और भाभी को बेकार की जिद लगती है। वसुधा ने किसी भी पुरुष से समझौता कर उसे स्वीकार करना चाहिए, ऐसी उनकी ईच्छा है। लेकिन वसुधा अपने निर्णय में किसी का दबाव नहीं चाहती, वह स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने के पक्ष में है। उसके इस दृष्टिकोण पर भाभी उसे विधवा होने का एहसास कराकर पीड़ित करती है। उपन्यास में भाभी कहती है - "गुण-अवगुण रहने दो तुम--कौन दूध का घुला मिल जाता है इस उम्र में। कुछ अपना खोट, कुछ दूसरे की लाचारी ईसलिए बात बन भी जाती है नहीं तो --।"^५

उपन्यास में विवेक का धर पर आकर मिलने के पश्चात उसके शादी के संदर्भ में विचार सुनकर धर के सभी सदस्य नाराज हो जाते हैं। आगे जब वसुधा युथ फेस्टिवल के लिए दिल्ली जाती है, तो विवेक के साथ हुई भेट से दोनों एक-दूसरे के जीवन के बारे में काफी कुछ जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। विवेक की पिछली जिन्दगी, सिरिन की मृत्यु, वसुधा और निखिल का साथ भैया और भाभी के विचार आदि निजी जीवन की कई पर्तें एक-दूसरे के सामने खोले जाते हैं। थोड़े दिनों के बाद एक बार फिर सेमिनार के सिलसिले में दिल्ली जाने के बाद वसुधा के कठोर हृदय में कुछ परिवर्तन हो जाता है, वह विवेक के बारे में पिघलने लगती है। वसुधा विवेक के संदर्भ में अपने मन में कोमलता महसूस करने लगती है। विवेक भी कुछ क्षणों के लिए वसुधा की ओर आकर्षित होकर उसे अपना करने का निर्णय करता है। लेकिन अपने अतीत के दुःख में वह इतना लिपटा हुआ है कि किसी भी स्थिति में उससे बाहर नहीं निकल सकता। वसुधा के सामने रखे हुए प्रस्ताव पर उसे पछतावा होने लगता है। विवेक बिना सोचे-समझे वसुधा को सब-कुछ भूल जाने की सलाह देकर उससे मिलना भी जरूरी नहीं समझता। संयमी, विवेकी एवं गंभीर वसुधा को विवेक के इस निर्णय पर आश्चर्य होता है। साथ ही साथ अपने मन की दुर्बलता पर क्षोभ भी होता है। इसी क्षोभ की वजह से वह दक्षिण भारत के प्रवास पर निकल पड़ती है।

वसुधा की दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान अपना आत्मपरिक्षण करते-करते वसुधा एक-एक तीर्थस्थान देखती है। प्रवास में अलग-अलग तरह के अनुभव, सुख-दुःखों के क्षणों से गुजरती है। इसी बीच एक अजोब-सी स्थिति में वसुधा बिमार पड़ती है। इस बीमारी में सहज, सामान्य, उल्लासमयी अतीत को भूलकर वर्तमान में जीनेवाला आनंद उसके जीवन में प्रकट होता है। वसुधा की पूरी बीमारी में आनंद उसके साथ रहता है। इसी बीच दोनों एक-दूसरे को अच्छी तरह से परखते-समझते हैं। वसुधा-आनंद मन-ही-मन एक-दूसरे को चाहते भी हैं। लेकिन वसुधा कड़ रुकी हुई, दृढ़ में फसी हुई लगती है। लेकिन दूसरी तरफ आनंद अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त करता है और समर्पित होना चाहता है। वसुधा को भी वह दृढ़ से बाहर निकलकर किसी निर्णय तक पहुँचने की सलाह देता है। वह वसुधा से कहता है, "इस समय पहेलियाँ न बुझाओ। बी फ्रैंक। बी कैडिड। गलत अंदाजा लगा लूँगा तो तुम आहत हो जाओगी--और मुझे अच्छा नहीं लगेगा। बोलो--अच्छा उठो--यहाँ से उठो। अन्दर चलो। रोसनी में मेरे सामने बैठकर बात करो।"^६

वसुधा आनंद के जीवन को भोगने के उल्लास को देखकर उससे विवाह का मन बना लेती है। अंत में वसुधा और आनंद एक-दूसरे के साथ जीवन बिताने का निश्चय करते हैं और वसुधा धर के सदस्यों को समझाने के लिए यात्रा से वापस लौट आती है। यात्रा से वापस लौटने के पश्चात उसके सामने फिर से कठिन परिस्थिति का निर्माण होता है। क्योंकि प्रवास से वापस आते ही उसे विवेक के तीन पत्र प्राप्त होते हैं, जिसमें उसने वसुधा से विवाह करने की इच्छा व्यक्त की है। वसुधा से विवाह करने वह अपने जीवन के दुःख को भूल सका है और अब पुरा जीवन उसके साथ बीताना चाहता है। लेकिन अब वसुधा आंतरिक-मानसिक दृढ़ में फस जाती है। अपनी इस दुविधाजनक स्थिति से बाहर निकलने के लिए वह आनंद का सहारा लेती है। आनंद एक सच्चे दोस्त के नाते उसे सहायता करता दिखाई देता है। वसुधा अपने जीवन में आये दोनों पुरुषों, विवेक और आनंद से अपनी भावनाओं का विश्लेषण करती है और बहुत सोच-समझकर इस मानसिक अन्तदृढ़ से निकलकर वसुधा आनंद को चुनती है। वसुधा विवेक को विनम्रता से ईनकार करने का पत्र लिखकर अपनी इच्छा के अनुरूप निर्णय करती है।

वसुधा के निर्णय पर टिप्पणी करते हुए राजेन्द्र प्रसाद पान्डे के शब्दों में - "पर बहुत सोच-विचार और अन्तर्द्वन्द्व तथा चयन की स्थितियाँ से गजरते हुए वसुधा आनंद नामक पुरुष का चुनाव करती है - प्रो विवक का नहीं। युवा विधवा समाज से, अपने आप से, अपने दुराग्रहों से, उलजनों से लडकर तब इसी स्थिति में पहुँची है। यह बातें विवेक को लिखे आमंत्रणपत्र में हैं। जिसमें आनंद के साथ सादी के आमंत्रणपत्र में भी दिया गया है। कहना न होगा कि यहाँ भी अपनी शर्तों पर ही जीती है। उसकी इच्छा और उसका चुनाव है। यह निश्चय ही स्त्री जागृती और चेतना संपन्न होने का लक्षण है।"७ आनंद का चुनाव करके वसुधा अपने अनुरूप समान साथी का चुनाव करती है। इसलिए उपन्यास का शीर्षक राजीसेठ ने 'तत्सम' रखा है। 'तत्सम' संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता है, 'उसके समान'। उपन्यास में वसुधा उसके समान जो भी है, उसे ढूँढ लेती है।

वसुधा के अलावा उपन्यास में शालिनी, शिरोन, निम्मी अपनी-अपनी कथाएँ लेकर उपस्थित होती है। इनके माध्यम से नारी मन की विभिन्न प्रवृत्तियाँ को खोला गया है। भाभी और अम्मा के माध्यम से आधुनिक विचारों की एवं परंपरागत रुढ़ियाँ, रित-रिवाजों और विचारों की नारी को अंकित किया गया है। 'तत्सम' उपन्यास की भाषा पात्रों की मानसिकता को उजागर करने में सक्षम है और शैली का प्रयोग भी बड़ी सहजता के साथ किया गया है।

संदर्भग्रंथ

१. यादव, उषा हिन्दी के महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना; पृ-१०५
२. शुक्ल, उमा, माधुरी छेडा, डॉ सुमनिका सेठी- आधुनिक कथा साहित्य में नारी स्वरूप और प्रतिमा, पृ-२५
३. राजीसेठ - तत्सम, पृ-२४- २५
४. राजीसेठ - तत्सम, पृ-२७
५. राजीसेठ - तत्सम, पृ-३३
६. राजीसेठ - तत्सम, पृ-२५१
७. राजेन्द्र पांडे- मुक्ति की आकांक्षा (आजकल- मार्च; १६) सं- प्रतापसिंह विष्ट ,पृ -४४